दैनिक राष्ट्रीय सहारा
कानपुर (उ0 प्र0)
दिनांक 01 DEC 2018

पानी बचाने की आदत डाले बगैर जल संचय करना बेमानी : नीतीश्वर

झांसी : कार्यशाला का शुभारम्भ करते अतिथि, मण्डलायुक्त व अन्य । फोटो : एसएनबी

भूगर्भ जल संचय एवं प्रबन्धन पर आयोजित एक दिवसीय कार्यशाला में किया जल संचयन पर मंथन

झाँसी (एसएनबी)। मानसिकता और दृष्टिकोण में बदलाव के साथ ही आचार-विचार में परिवर्तन लाने से ही जल दोहन रोकने व जलसंचय का कार्य किया जा सकता है। पानी बचाना जब तक आदत मे शामिल नही होगा तब तक जल संचय करना बेमानी है। जल संवर्धन के जो भी कार्य किये गये उन्हे लोगों से साझा किये जाए, ताकि जागरुकता से ही लोगों को जल संचय के लिए प्रेरित किया जा सके। बिन पानी सब सून, यह बात हम सभी को जाननी होगी और उपलब्ध जल से ही खेती व अन्य कार्य करने होगे, क्योकि पानी बना नही सकते है, तो बचा तो सकते है।

उक्त उद्‌गार मैनेजिंग डायरेक्टर, एन.डब्ल्यू.एम.एण्ड सयुक्त सचिव, राष्ट्रीय जल संसाधन मंत्रालय, नदी विकास एवं गंगा संरक्षण मंत्रालय भारत सरकार नीतीश्वर कुमार ने महारानी लक्ष्मीबाई पैरामेडीकल कालेज के आडीटोरियम में मुख्य अतिथि के रुप में भूगर्भ जल संचय एवं प्रबन्धन पर आयोजित एक दिवसीय एक कार्यशाला में व्यक्त किये। मुख्य अतिथि ने कहा कि ग्राम प्रधान, बीडीओ, एनजीओ व जिला प्रशासन के साथ लगातार ऐसी कार्यशाला का आयोजन होता रहेगा। उन्होंने कहा कि जल बचाना आदत में शामिल होगा तभी सफलता मिलेगी और यह सफलता आपसी सहयोग के साथ काम करने व अच्छे कार्य को दूसरों तक पहुंचाने पर ही मिल सकती है। उन्होंने जनपद ललितपुर में जल सहेलियों द्वारा किये गये कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा कि आप के ऊपर फिल्म बनायी जाए। जिसे दूसरों को दिखाकर मोटीवेशन किया जा सके, जिससे क्षेत्र की अन्य महिलाएं भी आगे आयेगी। उन्होंने बताया कि देश में लगभग 617 जिले ऐसे है जहां जल संकट निकट है, वही जल परिचर्चा होनी चाहिये, इन जिलो के लगभग 1000 ब्लाक में परिवर्तन लाना होगा, ताकि जलदोहन रोका जा सके। उन्होंने कहा कि 617 जि सबसे पहले यह कार्यशाला झांसी से प्रारम्भ की है क्योंकि जल कठिन और महत्वपूर्ण विषय है। उन्होंने बताया कि यदि मुझे एक बोतल पानी मिलता है तो जब तक पानी खत्म नही हो जाता तब तक बोतल फेंकता नही हूं। झांसी में दो ब्लाक क्रिटिकल से जहां सभी के प्रयास द्वारा जो कार्य किये गये उनके प्रभाव से अब वह इस श्रेणी में आ गये, जल्द ही सभी में और सुधार आ जाएगा।

ड्रिप इरीगेशन व स्प्रिंकलर के माध्यम से सिंचाई काफी लाभदायक : मण्डलायुक्त

एक दिवसीय कार्यशाला में मण्डलायुक्त श्रीमती कुमुदलता श्रीवास्तव ने मण्डल की भौगोलिक संरचना के विषय में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यहां पानी की विकट समस्या है, परन्तु वर्ष 2018 में अच्छी वर्षा होने से सभी नदियां, तालाब व बांध पूर्ण क्षमता से भर गये है। उन्होंने उपलब्ध जल का सदुपयोग करने की जानकारी देते हुए कहा कि ड्रिप इरीगेशन व स्प्रिंकलर क माध्यम से सिंचाई काफी लाभदायक है, अतः बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए उन्हे अधिक वितरण कराया जा सके। जल संचय के विषय में सभी को एक विचार के साथ कार्य करना होगा। उन्होंने एनजीओ व प्रधान द्वारा भी जल संरक्षण के कार्य करने व अन्य को प्रेरित का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि यह समस्या हम सभी की है, हमे ही इससे निपटना होगा।

जल संचय के लिए जागरूकता के अभाव से समस्या अधिक : जिलाधिकारी

जिलाधिकारी शिव सहाय अवस्थी ने कहा कि इस बार पर्याप्त वर्षा होने से सभी वाटर बाडीज भर गयी है। जिससे पानी की शिकायते कम आ रही है। बुन्देलखण्ड में जल संचय हेतु जागरुकता के अभाव से समस्या अधिक है। यहां पानी पंचायत प्रत्येक गांव में प्रभावशाली ढंग से कार्य कर सकती है। जहां जितना पानी उसका उसी हिसाब से खर्च करना। उन्होंने क्षेत्र में ड्रिप/स्प्रिंकलर को प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया और अधिक से अधिक किसानों को कवर करते हुए छूट बढ़ाये जाने का भी सुझाव दिया।

सिंचाई भूगर्भ जल पर ही निर्भर : डॉ. अख्तर

जिलाधिकारी जालौन डॉ मन्नार अख्तर ने बताया कि जिले में 338 चैकडैम बनाये गये तथा 463 तालाबो का जीर्णोद्वार किया गया। इसके साथ ही 150 टूटे व क्षतिग्रस्त चैकडैम को सुधारा गया जिससे पर्याप्त जल संचय हो सका। उन्होंने बताया कि जिले में 8500 नलकूप है, जिससे सिंचाई होती है, यहां सिंचाई भूगर्भ जल पर ही निर्भर है, अधिक भूगर्भ जल दोहन से क्षेत्र के हैण्डपम्प सूख गये है। उन्होंने क्षेत्र में कृषि व जल उपलब्धता की जानकारी पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन के माध्यम से दी और स्प्रिंकलर व ड्रिप को बढ़ावा देने का सुझाव दिया।

जनपद में वैज्ञानिक पद्धति से खेती को करना होगा प्रमोट : सहदेव

जिलाधिकारी महोबा सहदेव ने बताया कि भूगर्भ जल का दोहन लगातार हो रहा है। पथरीला क्षेत्र होने से वर्षा जल भूगर्भ में नही जा रहा, जिस कारण समस्या अधिक हो रही है। उन्होंने बताया कि दो ब्लाक अतिदोहित है, जहां कोई बोरिंग नही होती। जनपद में वैज्ञानिक पद्धति से खेती को प्रमोट करना होगा। साथ ही जल की उपलब्धता के अनुसार खेती करनी होगी। उन्होंने बताया कि 3 बांधों में जल संचय बढाने का काम किया गया है। इसके साथ 89 कार्य वाटर बाडीज पर किये जा रहे है। जिससे किसानों को लाभ होगा। उन्होंने भी स्प्रिंकलर व ड्रिप इरीगेशन को प्रोत्साहित करने का सुझाव दिया।

कार्यशाला में ग्राम प्रधान कामता प्रसाद ग्राम सैयर ने कहा कि क्षेत्र में मिट्टी हार्ड है जिससे खुदाई नही हो पाती है, यदि मशीन से मिट्टी खोदने की अनुमति मिल जाये तो कार्य बेहतर होगा। उन्होंने वृक्ष लगाने ने चैकडैम व नालो पर चैकडैम बनाकर जल संचय कार्य करने का सुझाव दिया। बीडीओ चिरगांव सुभाष नेमा ने भी जल के संचय उपयोग करने की जानकारी दी।

एनजीओ ताराग्राम के प्रतिनिधि भी जल संचय के विषय में पावर प्वाइंट प्रजेन्टेशन किया गया। परमार्थ सेवा संस्थान से जल सहेली श्रीमती पुष्पा ग्राम चंदापुर ललितपुर व श्रीमती रामवती ग्राम कलैथरा ललितपुर ने पानी की समस्या को दूर करने के लिए कुआं साफ करने की बात बताई सभी के कार्य की प्रशंसा की। साथ ही बताया कि 2013 में तालाब बनाया सभी ने मिलकर अब पानी की समस्या नही है।कार्यशाला का शुभारम्भ दीपप्रज्जवलित कर किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय 3 झांसी के छात्र-छात्राओं ने पानी बचाओ-जीवन बचाओ पर लघु नाटिका प्रस्तुत की। बुन्देली भाषा में प्रस्तुत इस नाटिका का निर्देशन एवं संयोजन डॉ. सुश्री नीति शास्त्री द्वारा किया गया।

कार्यशाला में अतिथियों का स्वागत करते हुए सी.वी. धर्माराव, सलाहकार जल संसाधन एवं नदी विकास ने कार्यशाला के उद्देश्य की जानकारी दी। कार्यशाला का संचालन वीरेन्द्र सिंह ने किया तथा आभार निदेशक गिरिराज गोयल ने व्यक्त किये। इस मौके पर मुख्य विकास अधिकारी जालौन,एडीएम ललितपुर, ज्वांइट मजिस्ट्रेट झांसी सहित मण्डल के आला अधिकारी व प्रधान, बीडीओ, स्थानीय निकाय, गैर सरकारी संगठन व प्रतिनिधि आदि उपस्थित रहे।